शेरगिल का भारतीयता

डॉ0 सुनीता शर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर–ललित कला विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

अमृता शेरगिल का भारतीय कला परिदृश्य में करीब 1930 के दशक के मध्य में आगमन हुआ। ऐसे समय में कुछ प्रतिभावान कलाकार आधुनिक भारतीय संस्कृति के अंदर प्रभुसता के विषय में कुछ प्रारम्भिक शैली बना रहे थे (नंदलाल बोस, रवीन्द्रनाथ टैगोर, राम किन्कर बैज और विनोद बिहारी मुखर्जी) और इस प्रेरणादायी पेशे और सांस्कृतिक शिक्षा शास्त्र के मूल्यों को स्थिरता प्रदान कर रहे थे। उस वक्त भारतीय चित्रकला में बंगाल शैली की धूम मची हुई थी और बंगाल आंदोलन, चित्रकला में अपने सर्वोच्च मोड़ पर था। लेकिन यह शैली पूरी तरीके से यूरोपीय पेंटिंग के प्रभाव से दूर थी। शेरगिल उच्च–वर्गीय सामाजिक स्तर से घिरी होने के कारण उत्तर भारत के इस आंदोलन के विषय में अधिक नहीं जानती थीं। उनके दिमाग में केवल कला के प्रति प्रेम व्याप्त था। उन्हें किसी भी प्रकार का बंधन सहन नहीं था। यहाँ तक कि अपने व्यक्तिगत जीवन में भी उन्हें किसी प्रकार की बाधा पसंद नहीं थी। उन्होंने अपने को हमेशा एक पेशेवर कलाकार के रूप में ही पसंद किया। वह अपने देश के करोड़ों लोगों के लिये एक आश्चर्यजनक संदेश लेकर लाईं थीं।

शेरगिल का चित्रकला के प्रति दृष्टिकोण एकदम अलग था उन्होंने कृत्रिम ढोंग, पाखंड, बौधिक आडंबर पर कसकर प्रहार किया। वह स्वतंत्र और निर्बाध होना चाहती थीं। उनका चित्रकार गोगा की तरफ जो आकर्षण था। वह गोगा के कला के रूपांकनों तथा रंगों से ही नहीं बल्कि नवीन तथा पुरातन के उनके अद्भुत मिश्रण के प्रयासों के लिये भी था। जिस प्रकार गोगा ने फ्रांस छोड़कर मारतिनिक और ताहिति की स्वच्छंदता में अपने सत्व को खोजा था, उसी तरह शेरगिल ने भी सोचा था की वो भारत को खोज लेंगी। संक्षेप में अमृता शेरगिल की आत्मा भारत की अंतरात्मा को खोजने का एक रास्ता था।

उन्होंने तय कर लिया था कि अपने कार्य की ऊँचाई पर पहुँचने के लिए वो अपने स्वदेश का ही चुनाव करेंगी, वो चाहती थीं कि उन्हें इसकी प्रेरणा वहीं से मिले। अमृता को भारत में अपने कला जीवन का सुनहरा भविष्य दिखाई दिया और वह भारत आने को व्याकुल हो उठी थीं।

यदि शेरगिल के आकर्षक व्यक्तित्व को पेंटिंग से अलग कर दिया जाये तो एक समस्या हो जाएगी। जिसमें वो भारत के प्रति अपनी रुचि को व्यक्त करती हैं और 1934 में अपने माँ–बाप से भारत लौटने के अपने निर्णय के विषय में लिखती हैं– ''सर्वप्रथम अपनी कलात्मकता के विकास के हित के लिये मुझे अपनी नवीन प्रेरणाश्रोतों की आवश्यकता है।''.....

''कितना आप लोग गलत सोचते हैं जब भारत के प्रति मेरी भावना को गलत कहते हैं, मुझे यहाँ की संस्कृति, यहाँ के लोग, इसका साहित्य पसंद है।'' उनका भारत के प्रति बढ़ते आकर्षण को यहां के असाधारण लोगों से उनका

परिचय जैसे की "Malcalm Muggeridge" जवाहर लाल नेहरु, सरोजनीं नायडू तथा एलोरा की गुफाएँ, Mattancherri के murals के प्रति झुकाव, मुगल पेंटिंग के प्रति उनकी आसक्ति में देखा जा सकता है।

शेरगिल जब अपने अनुभवों के विषय में लिख रही थीं उस समय वह रोमांटिक भावों जो गोगा के भूरे रंग की ताहितियन स्त्री और पुरुष से अलग होकर अजंता के फ्रेस्को के आकर्षण में बंध गईं। (ब्रह्मचारीज, ब्राइड टॉयलेट 1937, साउथ इण्डियन विलिजेज गोइंग टू मार्केट 1937) तथा वहाँ से राजपूत और मुगल पेंटिंग की तरफ उन्मुख हुईं। Mattancheri के mural की खोज उनकी मुक्ति का क्षण था और यहाँ के प्रभावशाली drawing और अनोखे रंग योजना ने उन्हें परम आनंद की अनुभूति कराई।

उनकी भारतीय कला की ज्ञानबोधता तथा सौंदर्य के प्रति उनके विषय में परिवर्तन उनके पात्रों के अंकन से पता चलता है।

शेरगिल के भारत में आने के पश्चात् उनके मानसिक दृष्टिकोण में बदलाव आया वह पेरिस से आइ थीं। उस स्थान पर भारतीय लघु चित्रों के तीखे रंग canvas पर अपना अधिकार जमाना शुरू कर दिये थे। एक पत्र में वह लिखती हैं कि– ''मैं मुगल राजपूत जैन शैली को अजंता से अधिक पसंद करने लगी हूँ।''

शेरगिल के पारम्परिक लघु चित्रों की रचना में अर्ध अमूर्त रूप में रंगों और आकृतियों की क्रीड़ा में जो उनके जीवन की क्रीड़ा को आत्मसात कर देते हैं. शेरगिल को भारतीय तीखे लाल रंग से परिचय हो गया था जो राजपूत पेंटिंग के शब्दकोश में भी एक विशेष महत्व रखता है। श्रृंगार रस में जो भारतीय सौंदर्य में नौ रसों में प्रथम तथा आदि रस माना जाता है वह है लाल, जो एक प्रबल रंग होता है। शेरगिल को Colurist कहा गया जिसमें उन्होंने सफेद का भी प्रयोग किया है। जो 'ब्रह्मचारी 1937' के विशाल संरचना के द्वारा श्वेत रंग के चरित्र को व्यक्त करती है। Mural और लघु चित्रों में श्वेत रंग का प्रयोग भावनात्मक है। यह खोज उनकी खुद की एक प्रकार की मौलिक सूझ बुझ को व्यक्त करती है।

उनके पात्रों द्वारा पता चलता है की वे पेंटिंग करने में प्रसन्न थीं, मुगल राजपूत लघु चित्रों के प्रति उनका अपार प्रेम था। शेरगिल का ध्यान रंग तथा आकृति के औपचारिक तत्वों में था जिसके कारण वो भारतीय सौंदर्य शास्त्र के श्रेष्ठ गुणों के समीप आ गईं। वह परम्पराओं तथा भारतीय सौंदर्य शास्त्र के सूक्ष्म बुद्धिमत्ता को अपने चित्रों के साथ जोड़ रही थीं। उनके मनोमष्तिष्क पर भारतीयता की जो छाप पड़ी थी वह उनके मरने के बाद भी कृतियों द्वारा अभिव्यक्त होती रही।

उनकी कला ना केवल भारतीय सामान्यजनों के सरल निश्छल जीवन का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है बल्कि उनकी कला ने समकालीन भारतीय कलाकारों का मार्गदर्शन भी किया। राष्ट्रवादी संदर्भ में वह एक मेधावी महिला थीं जिसने अपनी स्वयं की कल्पना के आधार पर एक सांस्कृतिक समन्वय कला के क्षेत्र में पैदा किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Geeti Sen Feminine Fable, p71
2. Letter to Parents From Budapest Dated September 1934,
3. Published in Marg. Op.Cit..page...73

Copyright © 2017, Dr. Sunita Sharma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.